बी. ए. पार्ट - I
(प्रधान हिन्दी)

डॉ. अनिरुद्ध प्र[illegible]
हिन्दी - विभाग
महाराजा कालेज

प्रथम पत्र

ले चल मुझे भुलावा देकर
(कवि जयशंकर प्रसाद)

प्रश्न : 'ले चल मुझे भुलावा देकर' कविता के भाव पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : प्रस्तुत गीत कवि जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित है। इस कविता में कवि ने अपने दुख भरे जीवन के प्रति निराशा का भाव व्यक्त किया है। कवि सांसारिक संघर्षों से सामना करते हुए ऊब गया है। उसकी दृष्टि में यह संसार छल-कपट से भरा हुआ है। यहाँ सुख और शांति कोसों दूर है। यहाँ प्रेमी को प्रेम के स्थान पर घृणा, निराशा एवं दुख प्राप्त होते हैं। यहाँ अविश्वास एवं स्वार्थ का बोल-बाला है। अतः कवि अपने नाविक से अनुरोध करता है कि वह उसे ऐसे दूर स्थान पर ले जाए जहाँ रम्य स्थल हो और किसी प्रकार का दुख एवं चिंता न हो। इस स्थान पर बैठकर कवि संसार के सुख-दुख के चित्रों को तटस्थ भाव से देखना चाहता है।

कवि नाविक को ऐसे स्थान में ले जाने को कहता जहाँ सागर की उत्ताल तरंगें इस कोलाहल भरे संसार को त्याग, अम्बर के निष्कपट प्रेम को चूमना चाहते हैं। कवि अपनी मन की भावनाओं को प्रकृति के उपादानों पर आरोपित करते हुए कहता है कि जिस प्रकार मैं सांसारिक जीवन के नाना प्रकार के उपदेशों से संघर्ष करते-करते थक गया हूँ। उसी प्रकार संध्या की कोमल काया भी क्लांत एवं श्रांत प्रतीत होती दिखलाई पड़ रही है। वह अपने नीली आँखों से तारों की पंक्तियों को ढुलकाती है। आकाश में टिमटिमाने वाले तारे मानो उसकी आँखों के आँसू हैं जिसके प्रवाह में वह अपने दुखों को व्यक्त करती है।

कवि अपने नाविक से प्रार्थना करता है कि हे-नाविक! तुम मुझे ऐसी जगह ले चलो जहाँ क्षितिज की सीमा को विश्राम मिलता हो। जहाँ मैं उसके गंभीर मधुर छाया में

P. T. O

Scanned with CamScanner

बैठकर विश्व को चित्रपट की भाँति देख सकूं। तथा सुख-दुख की वास्तविकता से परिचित हो सकूं। यहाँ कवि संपूर्ण विश्व के क्रिया-कलापों को देखना चाहता है जिससे विश्व की वास्तविकताओं का पता चल सके। सुख-दुख के इस क्रमिक चक्र का जहाँ स्पष्टीकरण हो सके और सर्वव्यापी एवं सर्वव्यापकता के रहस्य का पता लगाया जा सके।

कवि नाविक से कहता है कि ऐ नाविक! तुम मुझे ऐसी जगह ले चलो जहाँ क्षितिज के सीमा के बाद जहाँ चिर विश्राम हो, जहाँ उषा अपनी आँखों से अमर जागरण की ज्योति बिखेर रही हो, जो सृजनात्मकता से पूर्ण हो। अर्थात कवि नाविक को ऐसे स्थान पर ले चलने को कहता है जहाँ चिरंतन सुख हो, चिरंतन जागरण हो एवं जहाँ सब लोग चिन्तन एवं कर्म में लिप्त हों। जहाँ सभी वस्तुओं में स्फूर्ति हो, सजीवता हो। जहाँ सूरज अपनी पूरी आभा से सृजन की शक्ति बिखेर रहा हो। कवि ऐसे ही स्थान पर नाविक को ले चलने को कहता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि कवि का यह गीत निराशा से भरा होने के बावजूद हम में प्रेरणा जगाता है, स्फूर्त करता है एवं जागरण का संदेश देता है। कवि की अभिलाषा इस जगत को कर्मरत एवं सुखी देखने का है।